मध्यप्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

चतुर्दश विधान सभा तृतीय सत्र

जून-जुलाई, 2014 सत्र

सोमवार, दिनांक 30 जून, 2014

(9 आषाढ़, शक संवत् 1936)

[खण्ड- 3] [अंक- 1]

मध्यप्रदेश विधान सभा

सोमवार, दिनांक 30 जून, 2014

(9 आषाढ़, शक संवत् 1936)

विधान सभा पूर्वाह्न 10.32 बजे समवेत हुई.

{अध्यक्ष महोदय (डॉ. सीतासरन शर्मा) पीठासीन हुए.}

राष्ट्रगीत

राष्ट्रगीत "वन्देमातरम्" का गायन

अध्यक्ष महोदय- अब, राष्ट्रगीत "वन्देमातरम्" होगा. सदस्यों से अनुरोध है कि वे कृपया अपने स्थान पर खड़े हो जाएं.

(सदन में राष्ट्रगीत वन्देमातरम् का समूहगान किया गया)

10.34 बजे

शपथ

श्री कल्याण सिंह ठाकुर, सदस्य

अध्यक्ष महोदय--उप चुनाव में निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक 144-विदिशा से निर्वाचित सदस्य, श्री कल्याण सिंह ठाकुर शपथ लेंगे. सदस्यों की नामावली में हस्ताक्षर करेंगे और सभा में अपना स्थान ग्रहण करेंगे.

श्री कल्याण सिंह ठाकुर (विदिशा)--(शपथ).

10.35 बजे

निधन का उल्लेख

(1) श्री गोपीनाथ मुंडे, केन्द्रीय मंत्री
(2) श्री प्रभात पाण्डे, सदस्य विधान सभा
(3) श्री एस. मल्लिकार्जुनैया, पूर्व लोकसभा उपाध्यक्ष

(4) श्री तपन सिकदर, पूर्व केन्द्रीय राज्य मंत्री

(5) श्री नारायण प्रसाद शुक्ला, विधान सभा के पूर्व उपाध्यक्ष

(6) श्री बी.आर.यादव, पूर्व सदस्य विधान सभा, तथा

(7) श्री खुशवंत सिंह, पूर्व राज्य सभा सदस्य.

अध्यक्ष महोदयः- मुझे सदन को सूचित करते हुए अत्यन्त दुख हो रहा है कि केन्द्रीय मंत्री, श्री गोपीनाथ मुंडे का 03 जून, मध्यप्रदेश विधान सभा सदस्य श्री प्रभात पाण्डे का 12 अप्रैल, पूर्व लोकसभा उपाध्यक्ष श्री एस. मल्लिकार्जुनैया का 13 मार्च, पूर्व केन्द्रीय राज्यमंत्री, श्री तपन सिकदर का 02 जून, पूर्व विधान सभा उपाध्यक्ष, श्री नारायण प्रसाद शुक्ला का 15 जून, पूर्व विधान सभा सदस्य श्री बी. आर. यादव का 05 मार्च तथा पूर्व राज्य सभा सदस्य श्री खुशवंत सिंह का 20 मार्च, 2014 को निधन हो गया है.

श्री गोपीनाथ मुंडे का जन्म 12 दिसम्बर, 1949 को महाराष्ट्र के ग्राम नाथरा जिला बीड में हुआ था।

श्री मुंडे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से संबद्ध रहे. आप भारतीय जनता युवा मोर्चा महाराष्ट्र इकाई के अध्यक्ष रहे. श्री मुंडे 1980-1985 एवं 1990-2009 में पांच बार महाराष्ट्र विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए. आप महाराष्ट्र विधान सभा में नेता प्रतिपक्ष तथा राज्य के उपमुख्यमंत्री भी रहे.

आप पन्द्रहवीं, सोलहवीं लोक सभा के सदस्य निर्वाचित होकर केन्द्र सरकार में मंत्री के रूप में ग्रामीण विकास विभाग का दायित्व संभाल रहे थे.

आपके आकस्मिक निधन से देश ने एक कर्मठ समाज सेवी एवं लोकप्रिय राजनेता खो दिया है.

श्री प्रभात पाण्डे का जन्म 4 अगस्त, 1954 को सिहोरा जिला जबलपुर में हुआ था.

श्री पाण्डे 1984-1985 में सिहोरा नगर पालिका के पार्षद और उपाध्यक्ष रहे. आपने 1985-1990 में कृषि उपज मंडी तथा मार्केटिंग सोसायटी सिहोरा के संचालक के पद पर कार्य किया.

श्री पाण्डे भारतीय जनता पार्टी की ओर से 1990 में नौवीं, 1993 में दसवीं एवं 2013 में चौदहवीं विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे.

आपके निधन से प्रदेश के सार्वजनिक जीवन की अपूरणीय क्षति हुई है.

श्री एस. मल्लिकार्जुनैया का जन्म 26 जून, 1931 को ग्राम होनासिगेरे जिला तुमकुर (कर्नाटक) में हुआ था।

आप चार बार कर्नाटक विधान परिषद् के सदस्य और 1977-1991 में कर्नाटक विधान परिषद् के उपाध्यक्ष रहे. आप अनेक राजनैतिक, शैक्षणिक, सामाजिक एवं खेल संस्थाओं से सम्बद्ध रहे.

श्री मल्लिकार्जुनैया दसवीं, बारहवीं एवं चौदहवीं लोक सभा के सदस्य चुने गये और 1991-1996 में आपने लोक सभा के उपाध्यक्ष पद को सुशोभित किया.

आपके निधन से देश ने एक कुशल प्रशासक एवं लोकप्रिय नेता खो दिया है.

श्री तपन सिकदर का जन्म 20 सितम्बर, 1944 को हुआ था।

श्री सिकदर बारहवीं एवं तेरहवीं लोक सभा के सदस्य चुने गये और अक्टूबर, 1999 से सन् 2004 तक केन्द्र सरकार में संचार राज्य मंत्री रहे. आप विभिन्न सामाजिक संगठनों, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से सम्बद्ध रहे.

आपके निधन से देश ने एक लोकप्रिय नेता खो दिया है.

श्री नारायण प्रसाद शुक्ला का जन्म 15 दिसम्बर, 1931 को हुआ था।

श्री शुक्ला ने यू.पी.आई. एवं अन्य समाचार पत्रों की संवाद समितियों में एक लंबे समय तक कार्य किया.

आप इन्दौर नगर निगम के सदस्य, उप महापौर और महापौर रहे. आप अखिल भारतीय मेयर्स कौंसिल की कार्यकारिणी के सदस्य भी चुने गये.

श्री शुक्ला ने 1972 में प्रदेश की पांचवी विधान सभा में कांग्रेस की ओर से इन्दौर-04 का प्रतिनिधित्व किया था. आप 28 जुलाई, 1972 से 07 जनवरी, 1976 तक विधान सभा के उपाध्यक्ष तदनंतर 08 जनवरी, 1976 से 30 अप्रैल, 1977 तक मंत्रि-मण्डल में राज्य मंत्री रहे.

आपके निधन से प्रदेश के सार्वजनिक जीवन की अपूरणीय क्षति हुई है.

श्री बी. आर. यादव का जन्म 30 जून, 1930 को बिलासपुर (छत्तीसगढ़) में हुआ था।

श्री यादव 1947 से कांग्रेस से जुड़े और कांग्रेस सेवादल के नायक रहे. आप 1972 में मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य, जिला श्रमजीवी पत्रकार संघ तथा रंग भवन समिति के अध्यक्ष और नगरपालिका परिषद् बिलासपुर के सदस्य रहे.

श्री यादव ने छठी, सातवीं, आठवीं एवं दसवीं विधान सभा में कांग्रेस की ओर से बिलासपुर का प्रतिनिधित्व किया था. विभिन्न समयावधियों में आप अनेक विभागों के मंत्री रहे.

आपके निधन से प्रदेश ने एक लोकप्रिय नेता, कुशल प्रशासक एवं कर्मठ समाज सेवी खो दिया है.

श्री खुशवंत सिंह का जन्म 2 फरवरी, 1915 को हदाली (पाकिस्तान) में हुआ था ।

श्री सिंह ने 1939-1947 में लाहौर उच्च न्यायालय में वकालत की. आप 1947-1951 में विदेश मंत्रालय में पदस्थ रहे. आप अनेक समाचार पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादक रहे.

श्री सिंह 1980 में राज्य सभा सदस्य नामांकित हुए थे.

आपको पदम भूषण, पदम विभूषण तथा पंजाब सरकार द्वारा पंजाब रत्न एवं 2010 में साहित्य अकादमी सहित विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया. श्री सिंह ने साहित्य एवं पत्रकारिता में अपनी एक अलग पहचान स्थापित की थी. आपने अनेक पुस्तकें लिखीं और स्तंभकार के रूप में अपनी बेबाक् टिप्पणियों के लिये जाने गये.

आपके निधन से देश ने एक वरिष्ठ साहित्यकार और पत्रकार खो दिया है.

मुख्यमंत्री (श्री शिवराज सिंह चौहान) -- माननीय अध्यक्ष महोदय, अभी भी यह भरोसा नहीं होता कि माननीय गोपीनाथ मुंडे जी हमारे बीच में नहीं रहे. 3 जून के उस दिन को हम कभी भूल नहीं पाते और मन जबर्दस्त पीड़ा से भर जाता है जब ग्रामीण विकास और पंचायत मंत्री बनने के बाद उनके संसदीय क्षेत्र बीड़ में उनके स्वागत की तैयारियां थीं और वह वहां पर स्वागत सम्मान समारोह में भाग लेने के लिये जा रहे थे. लेकिन एयरपोर्ट जाते वक्त 3 जून की सबेरे एक विकास का सूरज अस्त हो गया. सारा देश स्तब्ध रह गया.

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अंतिम संस्कार में भाग लेने अपने साथियों के साथ गया था, वे इतने लोकप्रिय थे कि जनता जैसे बावली हो गई थी न किसी को कुछ समझ में आ रहा था न कोई किसी का दुख

बटा पा रहा था. जनता का उनके प्रति जो लगाव और स्नेह था वह दुर्लभ होता है. वे महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री भी रहे. और उप मुख्य मंत्री के नाते उन्होंने कुशल प्रशासक होने का परिचय दिया था और मुंबई पर अण्डर वर्ल्ड के ऊपर जब पहला प्रहार हुआ था वह माननीय गोपीनाथ मुंडे जी जब महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री और गृह मंत्री हुआ करते थे तब किया गया था उन्होंने अण्डर वर्ल्ड का जो नेटवर्क था उसको तहस नहस कर दिया था, वे महाराष्ट्र के अत्यंत लोकप्रिय नेता थे, और महाराष्ट्र में भारतीय जनता पार्टी के काम को खड़ा करने में उनका बहुत योगदान था, सही अर्थों में वे जन नेता थे, मॉस लीडर थे.

माननीय अध्यक्ष महोदय, केन्द्रीय मंत्री बनने के बाद में मेरी उनसे भेट हुई थी. और मैंने मध्यप्रदेश की समस्यायें विशेषकर प्रधान मंत्री ग्रामीण सडक योजना, आवास कुटीर की चीजें जब बताई थीं तो उन्होंने मुझे निमंत्रित किया था कि आप आईये मध्यप्रदेश के साथ में पूरा न्याय होगा. अध्यक्ष महोदय वो दिन नहीं आ सका कि हम उनसे जाकर के मिल सके. एक अत्यंत प्रतिभाशाली नेता अपने देश ने खो दिया.

अध्यक्ष महोदय,स्वर्गीय प्रमोद महाजन जी के वे जीजा लगते थे, एक परिवार जिसका भारतीय राजनीति में बड़ा योगदान था एक के बाद एक पहले स्वर्गीय प्रमोद जी चले गये और बाद में मुंडे जी चले गये . माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं केवल इतना ही कह सकता हूं कि :-

"बडे गौर से सुन रहा था जमाना

तुम्ही सो गये दांस्ता कहते कहते."

वे भुलाये नहीं जा सकते. यह केवल महाराष्ट्र की नहीं, पूरे देश की क्षति है. मैं उनके चरणों में श्रृद्धा के सुमन अर्पित करता हूं.

अध्यक्ष महोदय, मैं आज फिर भारी मन से सदन में आया हूं. क्योंकि अभी अभी चौदहवीं विधानसभा में हमारे अपने साथी जो हमारे साथ चुनकर आये थे आदरणीय प्रभात पांडे जी. कोई कल्पना नहीं कर सकता था कि इतनी जल्दी वे हमारे बीच से चले जायेंगे. ब्रेन हेमरेज के कारण काल ने उनको असमय हमसे छीन लिया. लेकिन वे इतने जीवट थे कि कई दिनों तक अस्पताल में वह जीवन जीतने की लड़ाई और मौत से जंग लड़ने का काम करते रहे. लंबे समय तक अस्पताल में वे भर्ती रहे. वे अत्यंत लोकप्रिय नेता थे. जनता के बीच में रहते थे. चुनने के बाद वहां के क्षेत्र की समस्याओं के बारे में मुझसे भी

विस्तार से चर्चा की थी. उनसे क्षेत्र को विकास की बहुत अपेक्षाएं थी. मेरा अपना विश्वास था वे जैसे धुन के, लगन के पक्के थे, निश्चित तौर पर न केवल क्षेत्र की समस्याओं का समाधान करते बल्कि जन कल्याणकारी योजनाओं को भी लोगों तक पहुंचाने का काम करते थे. उन्होंने नगर पालिका के पार्षद के रुप में और नगर पालिका के उपाध्यक्ष के रुप में फिर कृषि उपज मंडी हो या मार्केटिंग सोसायटी के संचालक हो हर दायित्व को बखूबी जनहित में निभाने का काम किया था. उनके असमय स्वर्गवास से हम सबके मन भारी हैं, हम सब दुखी हैं. उनके चरणों में मैं श्रृद्धा के सुमन अर्पित करता हूं.

अध्यक्ष महोदय, एस मल्लिकार्जुनैया जी मैं उनके साथ लोकसभा का सदस्य था. वह सहज थे. वे सरल थे. वे संकोची थे. एक आम आदमी बड़े पद पर पहुंच कर कैसे आचरण और व्यवहार करना चाहिए उसका अगर उदाहरण देखना है तो श्री मल्लिकार्जुनैया जी के जीवन में देखा जा सकता था. वे 4 बार कर्नाटक विधान परिषद के सदस्य रहे. फिर लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए और उसके बाद लोकसभा के उपाध्यक्ष बने. उपाध्यक्ष के रुप में सदन का उन्होंने निष्पक्षता के साथ और पूरी कुशलता के साथ संचालन करने का काम किया. उनके निधन से हमने एक लोकप्रिय नेता और कुशल प्रशासक और संसदीय ज्ञान का जानकार खो दिया है.

अध्यक्ष महोदय, तपन सिकदर जी ऐसे नेता थे कि जिनकी जड़ें जमीन में जनता के बीच बहुत गहरी थी. भारतीय जनता पार्टी का पश्चिम बंगाल में लोकसभा में खोलने वाले वे पहले नेता थे. तपन सिकदर भारतीय जनता पार्टी की टिकट पर लोकसभा का वहां से चुनाव जीतकर आये थे. मैं जब संसद सदस्य हुआ करता था वे केन्द्र सरकार में माननीय अटल जी के मंत्रिमंडल में मंत्री के रुप में काम करते थे और उन्होंने कुशल प्रशासनिक क्षमता का परिचय दिया था. उनके निधन से हमने एक समाजसेवा, एक शिक्षाविद्, एक अत्यंत लोकप्रिय नेता को खोया है.

अध्यक्ष महोदय, श्री नारायण प्रसाद शुक्ला जी के निधन से भी प्रदेश को अपूरणीय क्षति हुई है. इंदौर नगर निगम के वे पार्षद रहे हो, उप महापौर रहे हो या महापौर रहे हो. उन्होंने इंदौर के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने का काम किया. विधायक के नाते भी और विधायक के बाद वे विधानसभा के उपाध्यक्ष भी बने. उपाध्यक्ष होने के नाते उन्होंने इस सदन का कुशलता के साथ संचालन किया था.

राज्यमंत्री के रुप में भी उन्होंने कुशल प्रशासनिक क्षमता का परिचय दिया था. उनके निधन से भी सार्वजनिक जीवन में अपूरणीय क्षति हुई है.

अध्यक्ष महोदय, बी आर यादव जी, मैं नये सदस्यों की बात नहीं करता, लेकिन जब मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ एक था वे मध्यप्रदेश के वरिष्ठ राजनेताओं में से एक रहे हैं. वे इतने लोकप्रिय थे कि एकाध अपवाद छोड़ दिया जाये तो बिलासपुर से वे कभी हारे नहीं. जनता के बीच में लगातार काम करने के कारण वे अत्यंत लोकप्रिय थे और केवल लोकप्रिय नहीं थे, वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे. अनेक पदों पर रहकर उन्होंने पूरी कुशलता और दक्षता के साथ काम किया और मंत्री के रुप में चाहे वन मंत्री रहे हों या अन्य विभाग के मंत्री रहे हों, वे कभी भुलाये नहीं जा सकेंगे. उनके निधन से भी एक लोकप्रिय नेता एक कुशल प्रशासक और समाजसेवी हमने खोया है.

माननीय अध्यक्ष महोदय श्री खुशवंत सिंह जी जो उनके दिल में होता था वह उनकी लेखनी कागज पर लिख देती थी . वे खुले मन से लिखा करते थे आलोचनाओं की उन्होंने कभी परवाह नहीं की कौन क्या कहेगा कौन क्या सोचेगा इसकी चिंता उन्होंने कभी पाली नहीं और जो मन में आया वह उन्होंने लिखने का काम किया है. कई बार लोग सोचते हैं कि अगर हम यह कहेंगे या लिखेंगे तो जमाना क्या कहेगा, लोक लाज नहीं कहने देती है. लेकिन उनको जो लगता था वह आलोचनाओं की परवाह किये बिना लिखते थे. ऐसे साहित्यकार विरले हुआ करते हैं. उनके जीवन में भी जो होता था वह सच सच लिखा करते थे, जो वह करते थे वह भी लिखकर प्रकट किया करते थे. पूरा जीवन खुली किताब था. एक ऐसे साहित्यकार जिनकी रचनाओं के कारण उनको पद्मभूषण और पद्म विभूषण जैसे पंजाब रत्न जैसे अनेकों सम्मानों से सम्मानित किया गया . वे सचमुच में अद्भुत प्रतिभा के धनी थे उनमें बहुमुखी प्रतिभा थी , विद्वता के मामले में लेखनी के मामले में उनका कोई तोड़ नहीं मिलता . माननीय अध्यक्ष महोदय उनकी जो किताबें हैं . उन किताबों में जो बेबाक टिप्पणियां हैं उसके लिए वह सदैव याद किये जायेंगे, सदैव जाने जायेंगे. उनसे निधन से हमारे देश ने एक वरिष्ठ साहित्यकार को और एक ऐसे पत्रकार जो कि खोजी भी थे और जो अलमस्त भी थे ऐसे पत्रकार को हमने खोया है .

मैं अपनी ओर से उनके और सभी जो सम्मानित दिवंगत हैं जिनके नामों का आपने यहां पर उल्लेख किया है उनके चरणों में श्रद्धा के सुमन अर्पित करता हूं. साथ ही परमपिता परमात्मा से यह प्रार्थना करता हूं कि वह दिवंगत आत्मा को शांति दें और उनके परिजनों को उनके सहयोगियों को शुभचिंतकों को यह गहन दुख सहन करने की क्षमता दें. ओम शांति.

नेता प्रतिपक्ष(श्री सत्यदेव कटारे) – आदरणीय अध्यक्ष महोदय, श्री गोपीनाथ मुंडे जी भारतीय राजनीति के दैदीप्यमान सितारे थे और भारत सरकार में अभी मंत्रालय संभाला ही था. वह हम लोगों के बीच से जिस तरीके से गये, यह किसी के भरोसे के लायक ही नहीं था. जब यह घटना सुनी और जब तक दृश्य देखे , तब लगा कि यह घटना हो गई है. अध्यक्ष महोदय मुंडे जी का महाराष्ट्र की राजनीति में तो स्थान है ही मुंडे जी जब उप मुख्यमंत्री थे और गृहमंत्री थे उस समय मध्यप्रदेश में गृह विभाग का प्रभारी मंत्री मैं था. दिल्ली में दो कांफ्रेस हुई उसमें हम लोग मिले . अल्फाबेटिकल होने से महाराष्ट्र और मध्यप्रदेश हम लोग एक साथ बैठते थे, हमें याद है कि मुंडे जी यह बोलते थे कि – जो कल मैंने रिफरेंस किया था उसका रिफरेंस यहां पर आ रहा है -- कटारे जी इस मीटिंग में यह बड़े बड़े नेता हैं इन सबको झपकी आती है. हमारी और आपकी आंख बंद नहीं होना है, वह इतने सतर्क रहते थे हम दोनों वहां पर बैठे यह देखते थे कि क्या हो रहा है, क्या देखना है उस पर हमें कैसे कार्यवाही करना है. वह हर विषय के जिज्ञासु थे और उसमें घुसकर उसके अंतर्मन तक जाकर काम करते थे . अध्यक्ष महोदय,निश्चित रूप से उनको जो विभाग मिला था, उसमें वह देश की बहुत सेवा करते. वह इस दिशा में भारत सरकार का भी नाम ऊंचा करते लेकिन वह आज हमारे बीच से चले गये हैं. अध्यक्ष महोदय, हम भगवान से प्रर्थाना करते हैं कि उनके परिवार को यह दुख सहन करने की शक्ति दें और हम सब लोग और पूरा सदन उनके साथ है.

अध्यक्ष महदोय, श्री मल्लिकार्जुनैया के बारे में हमने सुना है हमारी मुलाकात उनसे कभी नहीं हुई है. लेकिन कभी कभी लोक सभा का चैनल देखते थे तो उनको आसंदी पर देखते थे और उनको बोलते हुए भी देखते थे. उससे लगता था कि वह प्रखर नेता थे . जनाधार से जुड़े हुए व्यक्ति थे और हमेशा जनहित या जनता के हित की बात करते थे, हमेशा उसी दिशा में काम करते थे . ऐसे महान पुरूष भी हमारे बीच से चले गये हैं निश्चित रूप से भारतीय राजनीति की और देश की बहुत बड़ी क्षति हुई है.

अध्यक्ष महोदय, इसमें कोई दो मत नहीं है कि जिस तरह से मुंडे जी और प्रमोद महाजन जी महाराष्ट्र में भारतीय जनता पार्टी के लिए एक बहुत शक्तिशाली व्यक्ति थे और उसको खड़ा करने की स्थिति में, जब भी इतिहास लिखा जायेगा तो इन दोनों का नाम हमेशा लिखा जायेगा, उसी तरह से तपन सिकदर जी का योगदान भारतीय जनता पार्टी के लिए भी रहा है. वहां की जनता के लिए भी रहा है और ऐसी स्थिति में जब कल्पना नहीं की जा सकती थी कि पश्चिम बंगाल में भारतीय जनता पार्टी की कोई सीट जीत लेगी उस दौर में भी वह जीतकर आये तो इससे उनकी लोकप्रियता का अंदाज लगाया जा सकता है. जनता के बीच में वह कितने घुले मिले होंगे इससे ही अंदाजा लगाया जा सकता है. मेरी मुलाकात तो उनसे कभी नहीं हुई है....

मेरी मुलाकात तो उनसे कभी नहीं हुई है. लेकिन जितना मैंने उनको दूर से देखा है, सुना है, समझा है, उससे लगता है कि भारतीय राजनीति में इनका महान योगदान था, जो इनके असामयिक निधन से अधूरा रह गया.

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, श्री नारायण प्रसाद शुक्ला जी, जो मध्यप्रदेश विधान सभा के उपाध्यक्ष भी रहे. जब हम पहली बार विधायक बनकर आए थे तो हम पुरानी कार्यवाहियां विधायकों की देखते थे, उसमें श्री विनय कुमार दीवान, श्री सूर्यदेव शर्मा, और इनके भी एकाध-दो प्रश्नों को, कुछ कार्यवाहियों को हमने देखा है, एक-दो भाषणों को भी देखा है. उससे लगता था कि वे जनता के बारे में क्या सोचते हैं और कैसे करना चाहते हैं. हमेशा जब वाणी निकलती थी तो जनहित की ही बात करते थे.

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, श्री बी.आर. यादव जी के साथ तो हम मंत्री भी रहे, विधायक भी रहे और जब विधायक थे तब उनसे काफी तीखे-तीखे सवाल पूछते थे और वे बहुत मीठे-मीठे उत्तर देते थे. आदरणीय अध्यक्ष महोदय, वे पत्रकार भी थे, वे सहकारिता के नेता भी थे, वे लेबर लीडर भी थे और कांग्रेस के नेता भी थे, लेकिन सारी भूमिकाओं के साथ-साथ जो उनकी जनता की सेवा करने की भूमिका थी, वह अद्वितीय थी. उसी का परिणाम था कि बिलासपुर में जब भी कांग्रेस कल्पना करती थी तो श्री बी.आर. यादव के बिना कल्पना अधूरी रह जाती थी.

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, श्री खुशवंत सिंह के बारे में कहा जाता था कि वह जब तक रहे, तब तक युवा रहे. उनकी लेखनी ही बताती है कि श्री खुशवंत सिंह जी क्या थे. निश्चित रूप से इतने खुले-दिल और खुले-दिमाग वाला साहित्यकार बहुत कम उपलब्ध होता है और उनके जाने से हमारे देश का भी नुकसान हुआ और साहित्य जगत का भी नुकसान हुआ. वे जब राजनीति पर लिखते थे तो भी प्रखर लिखते थे तो राजनीति का भी नुकसान हुआ. इन सभी महान लोगों के जाने से हमारी भारतीय राजनीति, भारतीय प्रजातंत्र, संसदीय प्रजातंत्र, इसका नुकसान हुआ, बहुत हानि हुई, जिसकी पूर्ति किया जाना निकट भविष्य में संभव नहीं है.

आदरणीय अध्यक्ष महोदय, मैं अपने दल की ओर से, अपनी ओर से इन सबको श्रद्धांजलि देता हूं. इन सबको नमन करता हूं और इन सबके परिवारों को भगवान दुख सहन करने की शक्ति दे, यह प्रार्थना करता हूं. इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी श्रद्धांजलि देता हूं.

उपाध्यक्ष महोदय (डॉ. राजेन्द्र कुमार सिंह)- माननीय अध्यक्ष महोदय, आपके द्वारा माननीय मुख्यमंत्री जी के द्वारा और माननीय प्रतिपक्ष के नेता के द्वारा इन दिवंगत आत्माओं को दी गई श्रद्धांजलि से मैं भी अपनी भावनाओं को जोड़ता हूं. निश्चित ही राजनीति के क्षेत्र में काम करना सरल नहीं होता है. संघर्ष का रास्ता होता है.

श्री गोपीनाथ मुंडे जी का देहावसान 3 तारीख को जब हुआ तो मैं तो क्या पूरा देश स्तब्ध रह गया और असमय में लोग चले जाते हैं, दिवंगत हो जाते हैं, जैसे श्री गोपीनाथ मुंडे जी, श्री प्रभात पांडे जी, श्री एस. मल्लिकार्जुनैया जी, श्री तपन सिकदर जी तो वास्तव में पीड़ा पहुंचती है. महाराष्ट्र के वे कितने बड़े नेता थे, जन नेता थे, यह बात माननीय मुख्यमंत्री जी ने कही, सदन के प्रतिपक्ष के नेता जी ने कही. पूरा देश जानता है, हम सब लोगों को बड़ा दुख हुआ.

श्री प्रभात पांडे जी, श्री काशी प्रसाद जी पांडे, काका पांडे जिन्हें हम लोग कहते थे और वर्ष 1967 में वे स्पीकर हुआ करते थे जब पहली बार संविद की सरकार बनी थी. बड़े मशहूर नेता थे, संसदविद् थे, उनके परिवार से श्री प्रभात जी आते थे और हमारा भी उनसे निकट का संबंध था और एक संयोग है कि उनकी मृत्यु के कुछ दिन पहले ही हम लोग ट्रेन से यात्रा कर रहे थे और साथ में बैठकर लगभग एक घंटे पुराने

संस्मरणों की चर्चाएं कर रहे थे. वे आज हम लोगों के बीच में नहीं हैं. सहसा यह भरोसा नहीं होता कि श्री प्रभात पांडे जी सामने नहीं बैठे हैं. उनको मैं श्रद्धांजलि देता हूं.

श्री मल्लिकार्जुनैया जी, वरिष्ठ नेता थे, लोकसभा के उपाध्यक्ष थे. हमारे तपन सिकदर जी, अटल जी की सरकार में केन्द्र में मंत्री रहे, उस काल के एक प्रखर नेता थे. इन सबके दिवंगत होने से एक रिक्तता आई है. जिसकी पूर्ति की जाना संभव नहीं है.

श्री नारायण प्रसाद शुक्ला जी और हम लोग ईदगाह हिल्स भोपाल में पड़ोसी हुआ करते थे. जब वो डिप्टी स्पीकर थे, मेरे पिता जी पुलिस अधिकारी थे और हम लोगों का बंगला आसपास था. मुझे अवसर मिलता था, अनेकों बार उनके पास जाने का, तब मैं राजनीति में उतना सक्रिय नहीं था, लेकिन उनके पास जाकर बैठता था. वे बड़े सरल और सहज स्वभाव के व्यक्ति थे. अनेक पदों को उन्होने सुशोभित किया. वे आज हमारे बीच में नहीं हैं इसलिए दुख होता है.

श्री बी. आर. यादव साहब के साथ काम करने का मुझे अवसर मिला. इतना सरल सहज व्यक्ति, उनको अपने पद का, प्रतिष्ठा का, जरा भी घमण्ड नहीं था. अध्यक्ष महोदय,ऐसे बहुत कम व्यक्ति राजनीति में देखे हैं. पत्रकारिता से उन्होंने अपना जीवन शुरू किया और प्रदेश के मंत्री बने. अनेकों विभाग उनके पास थे. राजस्व मंत्री थे, वन विभाग भी उनके पास रहा. आवास एवं पर्यावरण, तरह तरह के अनेकों विभाग उनके पास थे और मैंने कभी किसी अधिकारी से नहीं सुना कि बी.आर. यादव साहब कोई गलत काम करने के लिए कहते हैं और कोई दवाब डालते हैं. वे सबसे मिल कर काम करते थे, सबकी बात सुनते थे. वे आज हमारे बीच नहीं है. बड़ा दुख है.

अध्यक्ष महोदय,श्री खुशवंत सिंह जी के बारे में माननीय मुख्यमंत्री जी ने भी कहा, नेता प्रतिपक्ष ने भी कहा. मैं तो कहूंगा वे एक बिन्दास लेखक थे. उनके लिए 'बिन्दास' शब्द बिलकुल सही है. उनकी लेखनी ज्यादातर sixty plus के लोगों के लिए हुआ करती थी जो वे लिखते थे और किसी भी कंट्रोवर्सी से वो भय नहीं खाते थे. वे ऐसे व्यक्तित्व के धनी थे. हमारे देश का जो सर्वोच्च नागरिक सम्मान है, पद्म विभूषण, वह उनको दिया गया था, पंजाब रत्न से भी वे सुशोभित किए गए थे. दुख एक ही बात का है कि वे सैकड़ा नहीं मार पाये. एक युवा पहले चला गया, यौवन अवस्था में ही चला गया. उनकी शैली, उनकी भाषा,

आचार,व्यवहार सभी युवा जैसा ही रहता था. सैकड़ा नहीं बना पाये, निन्यानवें वर्ष में वे दिवंगत हो गये. मैं इन सभी महानुभावों को अपनी तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं.

श्री सत्यप्रकाश सखवार (अम्बाह)-जैसा कि हमारे अध्यक्ष महोदय, हमारे सम्माननीय मुख्यमंत्री जी, माननीय नेता प्रतिपक्ष इन्होने दिवंगतों के संबंध में पूरा बखान किया है. सम्माननीय केन्द्रीय मंत्री श्री गोपीनाथ मुंडे जी, सदस्य विधान सभा श्री प्रभात पाण्डे जी, पूर्व लोकसभा उपाध्यक्ष, श्री एस.मल्लिकार्जुनैया जी, पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री तपन सिकदर जी, विधान सभा के पूर्व उपाध्यक्ष श्री नारायण शुक्ल जी, पूर्व सदस्य विधान सभा श्री बी.आर.यादव जी, सदस्य राज्य सभा श्री खुशवंत सिंह जी, मैं इन सभी महानविभूतियों का जिन्होंने इस राष्ट्र के निर्माण में, राष्ट्रीय राजनीति में, अपने समाज के लिए, इस देश के लिये उन्होंने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया, ऐसी महान विभूतियों के चले जाने के कारण पूरे देश को क्षति हुई है.

मैं इन सभी के चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवारजनों को दुख सहन करने की क्षमता प्रदान करे.

अध्यक्ष महोदय- मैं, सदन की ओर से शोकाकुल परिवारों के प्रति सहानुभूतिपूर्वक हार्दिक संवेदना प्रकट करता हूं.

अब सदन दो मिनट मौन खड़े होकर दिवंगतों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करेगा.

(सदन द्वारा दो मिनट मौन खड़े होकर दिवंगतों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई)

दिवंगतों के सम्मान में सदन की कार्यवाही मंगलवार, दिनांक 1 जुलाई, 2014 को प्रातः 10.30 बजे तक के लिए स्थगित.

पूर्वाह्न 11.06 बजे विधान सभा की कार्यवाही मंगलवार, दिनांक 1 जुलाई, 2014

(10 आषाढ़, शक संवत् 1936) के प्रातः 10.30 बजे तक के लिए स्थगित की गई.

भोपाल,
दिनांक -30 जून, 2014

भगवानदेव ईसरानी
प्रमुख सचिव
मध्यप्रदेश विधानसभा